बुनियादी

मसीही

जीवन

मूळभूत जीवन — यीशु में
प्रस्तावना

आपके जीवन के लिये परमेश्वर के पास एक अद्‌भूत योजना है। आपके और हर व्यक्ति के जीवन में सफलता होना इस बात से निश्चित होगा, यदि आप और वे परमेश्वर के उद्‌देश्य को परिपूर्ण करते हैं या नहीं। प्रभु के उद्‌देश्य को ढूँढ कर उसे पूरा करने के लिये हमें हर दिन यीशु के लिये जीना सीखना है। इसी बात में आप की सहायता करने के लिये इस अध्ययन की रचना की गई है।

हर एक पाठ के तीन हिस्से हैं :

(१) पवित्र शास्त्र का अध्ययन,

(२) मूळभूत प्रश्न,

और (३) पवित्र शास्त्र को कंठस्थ — स्मरण करना।

पवित्र शास्त्र का अध्ययन आपको परमेश्वर के वचन की सच्चाई सिखायेंगे। मूळभूत प्रश्न इस सच्चाई को जीने में सहायता करेंगे। पवित्र शास्त्र का स्मरण आपको इस सच्चाई को अपने हृदय मे छुपाने में सहायता करेगा।

इस अध्ययन में आप अपनी समस्याओं की जड़ को (कारण) को जानेंगे, आपका शत्रु कौन है और इसे पराजित कैसे किया जाता है, अपनी समस्याओं का हल/ सुझाव और यीशु के लिये कैसे जीना और परमेश्वर का उद्‌देश्य जो आपके जीवन के लिये है उसे कैसे पूरा किया जाये (सिखेंगे) ।

इस पाठ की शुरूवात प्रार्थना से कीजिये। उत्तरों को अपने ही शब्दों में लिखिये। आपने जो सीखा उसे जीवन मे उतारने में परमेश्वर से सहायता माँगे। परमेश्वर आपको आशिषित करे जब आप उसके वचन का अध्ययन करें।

बुनियादी मसीही जीवन

पाठ १: समस्या

(पाप)

आयत अध्ययन : जो आयत दिए गए हैं उनका उपयोग करते हुए हर प्रश्न का उत्तर दें।

१. पाप क्या है ? १ यूहआ ३:४, याकूब ४:१७, रेमियो १४:२३ ब'

२. मत्ती १५:१९ के अनुसार पाप कहाँ से आता है?

३. पाप क्या उत्पन्न करता है ? याकूब १:१४—१७, रेमियो छ:२३ अ'

४. परमेश्वर के साथ हमारे संबंध को पाप क्या करता है? यशायाह ५९:२

५. पाप को दोषी कौन है ? रेमियो ३:२३

६. जो पाप के साथ व्यवहार नही करता परमेश्वर उनके साथ क्या करेगा।? नीतिवचन १०:२९ ब'

आधारमूत प्रश्न : आपने जो अध्ययन किया है उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने में आपकी मदद करना।

१. क्या आप महसूस करते हैं कि आपने पाप किया है? हाँ .... नहीं. .... अगर नहीं, तो इसी समय प्रार्थना करें कि परमेश्वर आपके पापों को दिखाएँ ताकि आप पश्चाताप करें।

२. हश्दय में ऐसी क्या मानसिकताएँ हैं जिसने आपको पाप करने के लिये उकसाया है?

३. पाप के द्वारा आप में क्या समस्याएँ हैं?

४. परमेश्वर के वचन, बाइबल के अनुसार, पाप के लिए क्या करना चाहिए क्या आप उसे करने के लिये तैयार हैं? हाँ..... नहीं..... अगर नहीं, इसी समय परमेश्वर से माँगे कि वह आपको एक पश्चातापी हृश्दय दें।

स्मरण करें :: **रोमियों ३:२३** को स्मरण करते हुए परमेश्वर के वचन को हृदय मे छुपाएँ।

अ = आयत का पहला भाग

ब = आयत का दूसरा भाग

पाप हर समस्या का कारण है ।

बुनियादी मसीही जीवन

पाठ —२

समस्या का समाधान

(उद्धार)

आयत अध्ययन : जो आयत दिए गए हैं उनका उपयोग करते हुए हर प्रश्न का उत्तर दें।

१. हमारे पाप के कारण परमेश्वर ने क्या किया? रोमियों ५:८

२. परमेश्वर ने यीशु मसीह को हमारे लिए मरने क्यों भेजा? यूहन्ना ३:१६

३. जब यीशु मसीह मरे तो उन्होंने हमारे पापों के लिए क्या प्रयोजन दिया? इफिसियों १:७

४. क्या परमेश्वर ने मनुष्य के लिए दूसरे तरीके का प्रयोजन दिया ताकि पाप की क्षमा हो? प्रेरितों के काम ४:१२

५. परमेश्वर की क्षमा प्राप्ती के लिए हमें क्या करना है? प्रेरितों के काम ३:१९

६. पश्चाताप के अलावा क्या दो बातें होनी चाहिए ताकि एक व्यक्ति का परिवर्तन हो? रोमियों १०:९—१०

७. अगर यीशु मसीह हमारा प्रभु है तो हम क्या करने की इच्छा रखते है, जो यीशु कहता है? लूका १४:२६,२७,३३, मत्ती १०:३७—३९

८. क्या होता है जब यीशू मसीह हमारा प्रभु और उद्धारकर्ता बनता है? २ कुरिन्थियों ५:१७

९. परमेश्वर हमें क्या देता है ताकि हम उसके लिए जिएँ? लूका ११:१३

१०. मसीह में हम नया व्यक्ति बनकर कैसे जी सकते हैं? गलतियों २—२०, ५—२४—२५

११. हम पवित्र आत्मा का समर्थ कैसे प्राप्त कर सकतें हैं ताकि उसके आत्मा के अनुसार चलें? प्रेरितों के काम १:५, २:१—४, ४:३१

१२. परमेश्वर का उद्धार पाने के बाद हमें निरन्तर क्या करना चाहिए ताकि पाप के उपर विजय पाएँ? गलतियों ५:१६—१८, १ यूहन्ना ५:१—३ रोमियो ६:१०—१८

१३. कौन—सी शारीरिक क्रिया यह दर्शाती है कि हमने पापों के लिये पश्चाताप किया है और यीशु मसीह को प्रभु और उद्धारकर्ता स्वीकार किया है? रोमियो ६:४, गलतियों ३:२७

<u>आधारभूत प्रश्न :</u> आपने जो अध्ययन किया है उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने में आपकी मदद करना।

१. क्या आप विश्वास करते हैं कि परमेश्वर आपसे प्रेम करता है, यीशू मसीह आपके लिये मरा और सिर्फ यीशु मसीह के द्वारा हमें पापों की क्षमा — प्राप्ती होती है? हाँ.....नहीं..... अगर नहीं तो इसी समय प्रार्थना करें और इसी समय माँगे की परमेश्वर के प्रेम की सच्चाई और उद्धार आपको वास्तविक लगे।

२) क्या आपने पाप के लिए क्षमा माँगा है, अपना हश्दय यीशु को दिया है और लोगों के बीच खुले रूप से अंगीकार किया है कि वह प्रभु और उद्धारकर्ता है? हाँ..... नहीं.....अगर नहीं तो यह प्रार्थना अपने हश्दय से करें और जो पहला व्यक्ति से आप मिलते हैं उसे कहें की यीशु आपका प्रभु और उद्धारकर्ता

है: '' परमेश्वर पिता, उस प्रेम के लिए धन्यवाद जो यीशु मसीह में आपने दिखाया है, मुझे आपकी जरूरत है। मैं इस संसार की बातों और शैतान की बातों से मुडता हूँ । मैं अपने हृदय खोलकर पापों के लिए पश्चाताप करता हूँ। यीशु मसीह, मै विश्वास करता हूँ कि आप मेरे पापों के लिये मरे और फिर से जी उठे। मेरे हृदय मे आईए ओर मेरे प्राण को बचाईए। मेरे जीवन पर नियंत्रण रखें और मेरे प्रभु और उद्धारकर्ता बन जाएँ। मुझे पवित्र आत्मा से भर दीजिये ताकि मैं आपके लिये जी सकूँ। मेरे प्रार्थना को सुनने के लिये धन्यवाद, यीशु मसीह के नाम से मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन''

३) क्या आपने स्वयं को, आपके संबंधो को, आपको लक्ष्यों को, आपके संपत्ति को यीशु मसीह के प्रभुत्व मे दे दिया है? हाँ..... नहीं.....अगर नहीं तो इसी क्षण प्रार्थना करें और आपके पास जो कुछ है उसे परमेश्वर से मांगे कि वह आपको बुद्धि दे ताकि आप उसका इसतेमाल उसके कार्य के लिये करें।

४) क्या आपने परमेश्चर से माँगा है कि उसके पवित्र आत्मा से भर दे ताकि प्रतिदिन आप परमेश्वर के वचन की आज्ञा में चल सके? हाँ..... नहीं.....अगर नही तो इसी क्षण प्रार्थना करें कि परमेश्वर आपको पवित्र आत्मा से भर दें और आपको एक आज्ञाकारी हृदय दे।

५. क्या आपने बपतिस्मा लेने के द्वारा यीशु मसीह के आज्ञा का पालन किया? हाँ..... नही.....अगर नहीं तो इसी क्षण आप निर्णय लें कि आप जितना जल्दी हो सके पानी का बपतिस्मा लेगें।

स्मरण करें :<u>यूहन्ना ३:१६</u> को स्मरण करते हुए परमेश्वर के वचन को हृदय मे छुपाएँ।

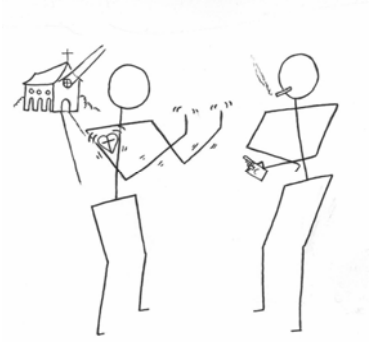

हमें सब कुछ परमेश्वर को दे देना चाहिए ताकि उसके लिये जी सकें ।

बुनियादी मसीही जीवन

पाठ —३

उद्देश्य

(अनंतकाल का जीवन)

आयत अध्ययन : जो आयत दिए गए हैं उनका उपयोग करते हुए हर प्रश्न का उत्तर दें।

१. अनन्त जीवन क्या है? यूहन्ना १७:३

२. परमेश्वर कौन है? यशायाह ४६:९, भजन संहिता ९०:२ यशायाह ५७:१५

३. परमेश्वर ने स्वयं को हमारे उपर कैसे प्रकाशित किया है? इब्रानी १:१—२: कुलुस्सियों १:१३—१६, युहन्ना १:१—४, ९,१४, भजन संहिता१९१:१—३

४. क्या यीशु मसीह परमेश्वर है? यशायाह ९:६, इब्रानी १:८, यूहन्ना २०:२८

५. यीशु ने किस प्रकार कहा कि उसके स्वर्ग जाने के बाद परमेश्वर स्वयं का प्रकटीकरण करेगा? यूहन्ना ४:२४, १४:१६—१७, १६:७—११

६. परमेश्वर के १३ मुख्य चरित्र क्या हैं?

क) यिर्मयाह २३:२३—२४

ख) अय्यूब ४२:२

ग) १ यूहन्ना ३:२०

घ) १ यूहन्ना १:१६

ड) १ यूहन्ना १:५

च) यशायाहं ६:३

छ) भजन संहिता १०३:८

ज) १ तीभुयियुस १:१७

झ) २ तीमुथियुस २:१३

त्र) दानिय्येल ९:१४

ट) यशायाह ४५:२१

ठ) रोमियो च :३३

७) मनुष्यजाति के लिए परमेश्वर की क्या इच्छा है? २ पतरस ३:९

८) परमेश्वर क्यों चाहता है कि मनुष्य पश्चाताप करे? यूहन्ना १:२—३

९) परमेश्वर आपके जीवन में क्या करना चाहता है जब आप उसके साथ संगति करते है? २ तीमुथियुस १:९

१०) हमारे जीवनो मे परमेश्वर के उद्देश्यों को खोजने और उसे पूरा करने के लिए हमें क्या करना चाहिए? फिलिप्पियों २:१२—१३ , इब्रानी ५:९

आधारमूत प्रश्न : आपने जो अध्ययन किया है उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने में आपकी मदद करना।

१. क्या आप परमेश्वर और यीशु मसीह को जिसको परमेश्वर ने भेजा, उसके जानने की खोज कर रहे हैं? हाँ..... नहीं..... अगर नहीं तो परमेश्वर से माँगे कि वह आपको उसे जानने के लिये मदद करें।

२. क्या आप सच्चे रूप से यह विश्वास करते हैं कि जो बाइबल कहता है वही परमेश्वर है? हाँ..... नहीं..... अगर नहीं, तो अपने अविश्वास के लिए पश्चाताप करें और परमेश्वर से माँगे कि वह आपको विश्वास द यह समझने के लिए कि जो हमें बाइबल बताती है वही परमेश्वर है।

३. क्या आप परमेश्वर की संगति में जीने का खोज कर रहें है? हाँ..... . नहीं..... यदि नहीं, तो आज से शुरू करें।

४. क्या आप अपने जीवन में पूरे हृदय से परमेश्वर के उद्देश्यों को खोजने और उसे पूरा करने की इच्छा रखतें हैं? हाँ..... नहीं..... अगर नहीं, तो इसी क्षण ऐसा करने का निर्णय लें।

५. क्या आप यीशु मसीह के आज्ञा के अनुसार जीवन में उसके पालन करने की खोज करते है? हाँ..... नहीं..... अगर नहीं, तो परमेश्वर से इसी क्षण एक आज्ञाकारी हृदय माँगे।

स्मरण करें :**यूहन्ना १७:३** को स्मरण करते हुए परमेश्वर के वचन को हृदय मे छुपाएँ।

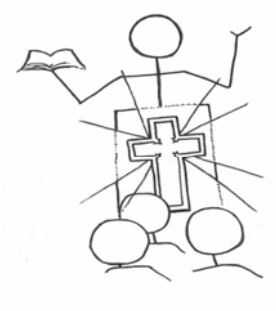

हमें अपने जीवन में परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए जीना चाहिये।

बुनियादी मसीही जीवन

पाठ —४

शत्रु

(आत्मिक युद्ध)

आयत अध्ययन : जो आयत दिए गए हैं उनका उपयोग करते हुए हर प्रश्न का उत्तर दें।

१. आपकों कौन नष्ट कर देना चाहता है? १ पतरस ५:८

२. शैतान के साथ कौन कार्य करता है ताकि हम नष्ट हो जाएँ? इफिसियों ६:१२

३. शैतान हमारी किस तरह परीक्षा लेता है ताकि हम परमेश्वर का निरादर करें? उत्पति ३:१ — ६, १३: लूका ४:१—१३, याकूब १:१४—१६

४. परमेश्वर हमें अनुमति क्यों देता है कि हम परीक्षा से गुजरें? १ पतरस १:६—७, रोमियों ५:३—५

५. क्या हम शैतान की परीक्षाओं पर विजय पाने की क्षमता रखते हैं? १ कुरि १०:१३

६. हमारे बचाव के लिए परमेश्वर ने क्या प्रयोजन दिया है? मत्ती २६:४१, इफिसियों ६:१०—११

७. हमारे आत्मिक हथियार के आठ भाग क्या हैं? इफिसियों ६:१३—१८

क.

ख.

ग.

घ.

ड.

च.

छ.

ज.

८. परमेश्वर के हथियार हमें क्या क्षमता देगा कि हम शैतान को पराजित कर सकें? २ कुरि.१०:३—६

९. हम शैतान को पराजित करने की क्षमता क्यों रखते है? १यूहन्ना ४:४

१०. जब एक व्यक्ति स्वयं को परीक्षा में डाल लेता है तो पाप के प्रभाव पर विजयी होने के लिए उसे क्या ४ बातें करने की जरूरत है? मरकुस १६:१७ , याकुब ५:१६, १ यूहन्ना १:९, लूका १७:३—४, लैव्यव्यवस्था ६:२—५

आधारभूत प्रश्न : आपने जो अध्ययन किया है उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने में आपकी मदद करना।

१. क्या आप महसूस करते हैं कि शैतान, परमेश्वर नहीं, लोग या परिस्थितियाँ, आपका दुश्मन है? हाँ.....नहीं..... यदि नहीं तो अपने हृदय को स्वीकार करने के लिए लगाएँ और आज का दिन इसपर विश्वास करें।

२. बडे परीक्षाओं के आपके क्या क्षेत्र हैं?

३. क्या आप आत्मिक हथियार पर प्रतिदिन ध्यान देते है; यह निश्चित करने की शैतान पर विजय के लिए आपको किस बात की जरूरत है ? हां... ..नहीं ... यदि नहीं, तो इसी क्षण ऐसा करना शुरू करें।

४. क्या आपके जीवन में हर सोच और इच्छा को परमेश्वर के इच्छा में लाने की खोज करते हैं ? हां..... नहीं..... यदि नहीं तो इसी क्षण से ऐसा करने की खोज करें।

५. क्या आपने परमेश्वर के वचन के अनुसार पाप के साथ व्यवहार और दूसरों के जीवनों में उसका कार्य किया है? हाँ..... नहीं..... यदि नहीं, तो आज से ऐसा करना शुरू करें।

स्मरण करें : **१पतरस ५:८** को स्मरण करते हुए परमेश्वर के वचन को हृदय मे छुपाएँ।

हमे परमेश्वर का सम्पूर्ण हथियार पहन लेना चाहिए

बुनियादी मसीही जीवन

पाठ —५

आत्मिक बढोत्री

(यीशु मसीह के लिए जीवन व्यतीत करना सीखना)

आयत अध्ययन : जो आयत दिए गए हैं उनका उपयोग करते हुए हर प्रश्न का उत्तर दें।

१. आत्मिक बढोत्री के तीन चरण क्या है और हर चरण में क्या होता है? १यूहन्ना:२:१२—१४

क.

ख.

ग.

२. हमें प्रतिदिन क्या करना चाहिए ताकि परमेश्वर के संबंध मे बढें? लूका ९:२३, रोमियो १२:१—२

३. हमारे विश्वास की बढोत्री के लिए हमें किन बातों की खोज करनी चाहिए ताकि हम आत्मिक रूप से बढें और किस प्रकार से ? २ पतरस १: ५—११

४. जिस प्रकार हम परमेश्वर में बढ़ते हैं और हमारे मन का नवीनीकरण होता है, हमारे जीवन से परमेश्वर क्या हटाएगा और उसे किन बातों से प्रतिस्थापन करेगा? इफिसियों ४:१७—५:१६

हटाना **प्रतिस्थापन करना**

५. आत्मिक रूप से बढने के लिए, लोगों के साथ हमारी जो समस्यएँ हैं उसके साथ हमें किस प्रकार से व्यवहार करना चाहिए? मत्ती ५:२३—२४, १८:१५—१७

६. आत्मिक रूप से बढ़ने के लिए हमें किस प्रकार जीना है? रोमियों ८:५—६, गलतियों ५:१६—२५

७. आत्मिक बढ़ोत्री आपको किस प्रकार परमेश्वर के साथ संबंध में मदद करेगा? यूहन्ना ७:१७, इफिसियों ५:१७

८. परमेश्वर की इच्छा के अनुसार करना हमें इस जीवन में क्या अनुभव करने की क्षमता देता है? रोमियों ८:१,१३—१४,२८, ३९, ३५—३९, कुलस्सियों १:९—१३

आधारभूत प्रश्न : आपने जो अध्ययन किया है उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने में आपकी मदद करना।

१. आप आत्मिक बढ़ोत्री के किस चरण पर हैं?

२. क्या आप प्रतिदिन अपना जीवन मसीह को दे रहे हैं ताकि आप आत्मिक रूप से बढ़ें ? हां..... नहीं ..... अगर नही तो इसी क्षण प्रार्थना करें और अपना जीवन परमेश्वर को दे दें और प्रतिदिन हर सुबह इस बात को करें।

३. क्या आप उन बातों की खोज करते हैं जो विश्वास के साथ उन बातों को जोडते हैं जो आपको आत्मिक रूप से बढ़ा सके और क्या आप सही प्रकार से इस बात को करते हैं? हाँ.....नहीं.....यदि नहीं, तो इसी क्षण ऐसा करना शुरू करें। प्रार्थना करें और परमेश्वर से मांगे की वह आपको इस बात के लिए मदद करें।

४. परमेश्वर को आपके जीवन से क्या बातें हटाने की जरूरत है ताकि आप आत्मिक रूप से बढ़ सकें।

इसी क्षण पश्चाताप कर प्रार्थना करें और परमेश्वर से मांगे कि आपके जीवन से इन बातों को हटाए और उनका प्रतिस्थापन आत्मिक बातों से करें।

५. क्या आप ऐसा खोजते हैं जो मन को आत्मा की बातों पर लगाए रखें ताकि वह आत्मा मे चल सकें ? हां..... नहीं..... यदि नहीं, इसी क्षण प्रार्थना करें, परमेश्वर से यह मांगते हुए कि आपका मन आत्मा की बातों पर लगा रहे।

६. क्या परमेश्वर की बातों को जानना और उसके इच्छानुसार करना आपके जीवन का सबसे महत्वपूर्ण बात है? हां..... नहीं..... यदि नहीं, तो इसी क्षण निर्णय लें ताकि यह बात आपके जीवन की प्रमुखता बने।

स्मरण करें : लूका ९:२३ को स्मरण करते हुए परमेश्वर के वचन को हृदय मे छुपाएँ।

आत्मिक बढ़ोत्री के तीन चरण

बुनियादी मसीही जीवन

पाठ —६

आत्मिक भोजन

(प्रार्थना और बाइबल अध्ययन)

क) प्रार्थना

आयत अध्ययन : जो आयत दिए गए हैं उनका उपयोग करते हुए हर प्रश्न का उत्तर दें।

१. आप परमेश्वर की उपस्थिती मे कैसे प्रवेश करते हैं ताकि उसके साथ बातचीत करें? भजन संहिता १००:४: १तीमुथियुस २:८

२. परमेश्वर की स्तुति करने से हमें क्या करने की मदद मिलती है? इफिसियों ५:१८—२०

३. किन दो प्रकार से हम प्रार्थना करते हैं ? १ कुरिन्थियों १४:१५

४. हम आत्मा में किस प्रकार प्रार्थना करते हैं? रोमियों ८:२६, १ कुरिन्थियों १४:१४

५. आत्मा में प्रार्थना करने से क्या होता हैं? यहूदा २०

६. हम अपनी समझ से किस प्रकार प्रार्थना करते है? मत्ती ६:५—१३

७. क्या बाते है जिसके लिए परमेश्वर हमसे प्रार्थना करने को कहता है? मत्ती ५:४४, ९:३८, भजन संहिता ३२:५—६, १२२:६, याकूब १:५, ५:१६, १ तीमुथियुस २:१—३

८. हमें प्रार्थना कब करना चाहिये? १ थिस्सलुनीकियों ५:१७, लूका १८:१

९. हमें प्रार्थना के साथ क्या जोड़ना है ताकि कभी कभी शत्रु को हरा सके? मत्ती १७:२१

१०. यदि हम यीशु मसीह के लिये जी रहे हैं तो हमारी प्रार्थना को लेकर वह हमसे क्या वायदा करता है? १ यूहन्ना ३:२२, ५:१४

११. परमेश्वर को हमारे प्रार्थनाओं को सुनने से कौन रोकेगा? याकूब ४:३, भजन संहिता ६६:१८, १ पतरस ३:७, मरकुस ११:२५—२६

१२. इन सब रूकावटों को हटाने के लिए हमें क्या करना चाहिए? १ यूहन्ना १:९

आधारभूत प्रश्न : आपने जो अध्ययन किया है उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने में आपकी मदद करना।

१. क्या आप जब प्रार्थना करते हैं तो परमेश्वर के पास धनयवादित हृदय से जाते हैं? हां..... नहीं..... यदि इस क्षेत्र में आपको कोई समस्या है, तो परमेश्वर की स्तुति करें जैसे ही आप प्रार्थना करना शुरू करें।

२. क्या आपने परमेश्वर को अनुमति दिया है कि वह आपको अपनी आत्मा से भरे? हां..... नहीं..... यदि नहीं, तो इसी क्षेण प्रार्थना करें अपनी इच्छा को परमेश्वर को देते हुए और उसके आत्मा के भरपूरी के लिए। उसकी स्तुति करना शुरू करें अपने हृदय से।

३. क्या आप आत्मा में प्रार्थना करते हुए अपने विश्वास को बनाते हैं? हां..... नहीं..... यदि नहीं, तो इसी क्षण ऐसा करना शुरू करें।

४. परमेश्वर ने जो प्रार्थना का नमूना दिया है, क्या आप उसी तरह परमेश्वर के बातों के लिये प्रार्थना करते हैं? हां.....नहीं.....यदि नहीं, तो आज से शुरू करें।

५. क्या आपके जीवन में ऐसी कोई बात है जो परमेश्वर को आपके प्रार्थनाओं को सुनने से रोकेगा? हां..... नहीं.....यदि हां, तो इसी क्षण पश्चाताप करें।

६. आपके जीवन के परिस्थितियों में प्रार्थना करने के लिए क्या आप हमेशा तैयार रहते है? हां..... नहीं..... यदि नहीं तो इसी क्षण परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह आपको प्रार्थना की आत्मा दे।

७. क्या आप कठिन समय आने पर कभी उपवास करते हैं, और समस्या पर विजय पाते हैं? हां..... नहीं..... यदि नहीं तो आज से ऐसा करना शुरू करें।

समरण करें : <u>(१ तीमुथियुस २:८)</u> को स्मरण करते हुए परमेश्वर के वचन को हृदय मे छुपाएँ।

ख) बाइबल । : आयत अध्ययन : जो आयत दिए गए हैं उनका उपयोग करते हुए हर प्रश्न का उत्तर दें।

१. मनुष्य को कैसे जीना चाहिए? मत्ती ४:४

२. मसीह होने के नाते हमें क्या खाना चाहिये कि हम बढ़ें?१पतरस २:१—३

३. हम किस प्रकार जानते है कि हम बाईबल पर भरोसा कर सकते हैं ? २ तीमुथियुस ३:१६

४. जो कुछ वचन हमें सिखाता है उसके बावजूद क्या छह वाते हैं जो हमें परमेश्वर के वचन के साथ— साथ करना है? इफिसियों ३:४, २ तीमुथियुस २:१५, भजन संहिता १:१—२, ११९:११, १ यूहन्ना १:१—३, हबक्कूक २:२

५. परमेश्वर हमें किस प्रकार मदद करता है जैसे हम उसके वचन को पढ़ते हैं? यूहन्ना १६:१३—१४

६. परमेश्वर के वचन को सुनना हमारे विश्वास के लिए क्या करता है? रोमियो १०:१७

७. जब हम परमेश्वर का वचन पढ़ते हैं और बांटते हैं तो वह हमें शत्रु के साथ लडने मे किस तरह मदद करता हैं ? इब्रानियों ४:१२

८. जो परमेश्वर के वचन के अनुसार जीते हैं, यीशु मसीह उनके विषय में क्या कहता है? यूहन्ना ८:३१—३२

आधारभूत प्रश्न : आपने जो अध्ययन किया है उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने में आपकी मदद करना।

१. क्या आप अपनी आत्मा को प्रतिदिन परमेश्वर का वचन खिलाते हैं? हां.....
..नहीं..... यदि नहीं, तो आज से शुरू करें

२. क्या आप परमेश्वर के वचन पर ममन कर उसे याद करते हैं ताकि आपको पता चले कि जीवन के समस्याओं के साथ कैसे व्यवहार किया जाए, और वचन आपके हृदय ओर मन को स्वच्छ कर सके? हां.....नहीं.....यदि नहीं तो आज ऐसा करना शरू करें।

३. क्या आप उन बातों को लिखते हैं जो परमेश्वर आपसे कहता है जैसे आप उसके वचन को पढ़ते हैं? हां..... नहीं..... यदि नहीं तो आज से ऐसा करना शुरू करें।

४. आपको परमेश्वर उसके वचन के अनुसार जो दिखाता है क्या आप अवसर मिलने पर उसे बांटते है ताकि दूसरे उससे लाभ उठाए जिससे परमेश्वर ने आपको आशीषित किया है? हां.....नहीं..... यदि नहीं, तो आज से ऐसा करना शुरू करें।

५. बाइबल की पुस्तकों को याद करके उन्हें नीचे लिखें

स्मरण करें : <u>२तीमुथियुस ३:१६</u> को स्मरण करते हुए परमेश्वर के वचन को हृदय मे छुपाएँ।

हमें परमेश्वर के वचन से जीना है और प्रतिदिन प्रार्थना करना है ताकि वह हमारे आत्मिक मनुष्य को सामर्थी बनाएँ

बुनियादी मसीही जीवन

पाठ —७

आत्मिक व्यायाम

(संगति और गवाही देना)

क) संगति

आयत अध्ययन : जो आयत दिए गए हैं उनका उपयोग करते हुए हर प्रश्न का उत्तर दें।

१. यदि हम यीशु मसीह के लिए जीते हैं तो हमें क्या करने की क्षमता होनी चाहिए? १ यूहन्ना १:७

२. हमें संगति की जरूरत क्यों है? इब्रानियों १०:२४—२५

३. हमें किस तरह पता है कि हम परमेश्वर से प्रेम करते है? १ यूहन्ना ४:२०—२१, ५:२

४. दूसरों को कैसे पता होता है कि हम यीशु मसीह के जन हैं? यूहन्ना १३:३५

५. दूसरे मसीहियों के साथ हम किस तरह परमेश्वर का प्रेम दिखाते हैं? यूहन्ना ३:१७, गलतियों ६:१०, याकूब १:२७, २:१४—१७

६. हमे किसके साथ संगति नही करना चाहिए? नीतिवचन १२:२६, १ कुरिन्थियों १५:३३, २ कुरिन्थियों ६:१४

आधारभूत प्रश्न : आपने जो अध्ययन किया है उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने में आपकी मदद करना।

१. क्या आप दूसरे मसीहियों के साथ संगति करने को खोजते हैं ताकि वे आपके आत्मिक बढ़ोत्री में मदद करें? हां..... नहीं..... यदि नही तो आज से ऐसा करना शुरू करें। परमेश्वर से मांगे कि वह आपको ऐसे लोगों के साथ संगति करने में मार्गदर्शन करे जिसके साथ परमेश्वर चाहता है कि आप संगति करें।

२. क्या आप विशेष तौर पर मसीहियों की सेवकाई करते हुए यह दिखाते हैं कि आप परमेश्वर से कितना प्रेम करते है जब कभी ऐसा करने में आपसे क्षमता हो ? हां.....नहीं..... यदि नहीं, तो पश्चाताप करें और परमेश्वर से मांगे कि वह आपको इसके प्रति विश्वास योगय बनने में मदद करें।

३. क्या आप ऐसे लोगों के साथ संगति रखते हैं जिन्हें यीशु मसीह से प्रेम नहीं है? हां.....नहीं..... यदि हां तो परमेश्वर से मांगे कि वह आपको मसीहियो के साथ संगति करने की खोज में मदद करें जो मसीह से प्रेम करते हैं और जो उसके लिए जीने की खोज करते हैं।

स्मरण करें : **इब्रानियों १०:२४—२५** को स्मरण करते हुए परमेश्वर के वचन को हृदय मे छुपाएँ।

ख) गवाही देना

आयत अध्ययन : जो आयत दिए गए हैं उनका उपयोग करते हुए हर प्रश्न का उत्तर दें।

१. कौन सी ऐसी एक सेवकाई परमेश्वर ने हमें दिया है ? २ कुरिन्थियों ५:१८—१९

२. परमेश्वर के जन होने के नाते हमें क्या करने की तैयारी करना चाहिए? १ पतरस ३:१५

३. हमें प्रतिदिन के कार्य करते समय क्या करना चाहिए? मत्ती १०:७—८

४. हमें कँहा और कैसे यीशु मसीह के लिये गवाही देना चाहिये? प्रेरितों के काम १:८

५. खोए संसार के लिए पवित्र आत्मा किन तीन बातों के साथ व्यवहार कर रहा है? यूहन्ना १६:७—११)

६. पौलूस जहाँ कहीं जाता तो कौन सी दो बातें बांटता था? प्रेरितों के काम २०:२१

७. पवित्र शास्त्र के अनुसार सुसमाचार संदेश के दो मुख्य बातें क्या हैं, रोमियो ३:२३, ६:२३, ५:८, २:४, १०: ९—१०, ६: १७—१८

९. परमेश्वर का निर्देशन और वायदा हमारे लिए क्या होता है जब हम उसके नाम से जाते है? मत्ती २८:१८—२०

आधारभूत प्रश्न : आपने जो अध्ययन किया है उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने में आपकी मदद करना।

१. क्या आप यीशु मसीह के बारे में बताते आए हैं जैसे आप प्रतिदिन का कार्य करते है: हां..... नहीं..... यदि नहीं, पश्चाताप कर और परमेश्वर से मदद मांगे कि वह आपको दूसरों को गवाही देने में मदद करें।

२. क्या आप दूसरों को पश्चाताप करने और यीशु मसीह के लिए जीने के विषय में बोलते है या आप पश्चाताप के विषय को छोड देने की कोशिश करते है? बतातें है ..... नही बतातें है, यदी नही बताते हैं तो परमेश्वर से माँगे कि वह आपको सुसमाचार संदेश को साहस के साथ बांटने के लिये मदद करें।

३. क्या आप लोगों को यीशु मसीह को उनके दिलों में स्वीकार करने और किस तरह यीशु मसीह के लिए जीना है, यह शिक्षा देते हुए उनको शिष्य बनाते हैं?

हाँ.....नहीं.....यदि नहीं तो इस अध्ययन में जो आपने पढ़ा है उसे आप लोगों के साथ बांटे।

स्मरण करें : १ पतरस ३: १५ को स्मरण करते हुए परमेश्वर के वचन को हृदय मे छुपाएँ।

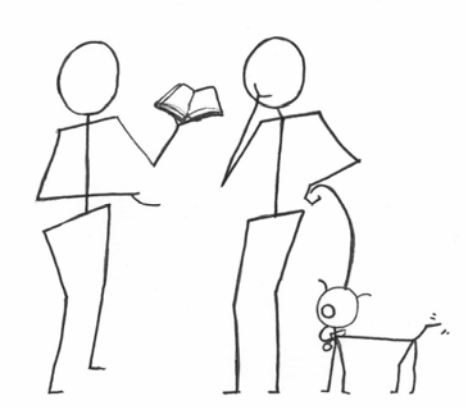

हमे प्रतिदिन गवाही देना है ताकि हम आत्मिक सामर्थ में बढ़े।

लोगों के जीवन के लिए परमेश्वर के पास एक अद्भुत उद्देश्य है। हम उन्हें मदद करना चाहतें हैं ताकि वे इसे ढूंढकर उस उद्देश्य को पूरा करें। यदि आप या किसी को आगे का प्रशिक्षण, प्रार्थना या इस बात की सूचना चाहिए कि किस प्रकार आप या दूसरे, यीशु मसीह के विषय में बांटना चाहते जहाँ कहीं आप कार्य करते हों या निवास करते हों तो कृपया हमसे संपर्क करों

BASIC INSTITUTE REQUEST FORM

यदि आप आगे का प्रशिक्षण अंग्रेजी में चाहते हैं, तो कृपया हमसे संपर्क करे।

NAME _____

ADDRESS _____

CITY_____ STATE_____ ZIP_____

COUNTRY_____

HOME PHONE _____

WORK PHONE _____

CELL PHONE _____

BEEPER _____

FAX _____

EMAIL _____

I would like to train in English.

Please send me the BASIC Institute Catalog.

I have a prayer request. (Please put on back)

Mail To:

BASIC Institute
P.O. Box 431
Kiln, MS 39556 U.S.A.
Or
Phone (228) 255-9251 / Fax (228) 255-8927
Email basic@basicministries.com
Web page www.basicministries.com

यदि आप इस अध्ययन से (आशिषित) हुए हैं तो किसी के साथ इसकी प्रतिलिपि को बाँटे।

प्रकाशक से सीधा प्राप्त । अंग्रेजी में लिखकर हमें अवश्य बतायें
आप किस भाषा में चाहते हैं।

WRITE TO:

BROTHERS & SISTERS IN CHRIST
P.O. BOX 431
KILN, MS 39556
U.S.A.

Phone (228) 255-9251

Fax (228) 255-8927

Copies are available by Email
Send your request to basic@basicministries.com
Or
Visit our web site
www.basicministries.com

COPIES ARE AVAILABLE IN OTHER LANGUAGES.
CONTACT US FOR MORE INFORMATION.

क्या आपने कभी सोचा है कि जीवन का प्रयोजन क्या है ?

क्या आप जानना चाहते हैं कि आपकी समस्याओं का कारण क्या है, जड़ क्या है और उन पर विजय कैसे प्राप्त किया जाए ?

क्या आप जानने के इच्छुक हैं कि यीशु में एक स्थिर विजयी जीवन कैसे जियें ?

क्या आप अपने मित्र या प्रियजन से बाँटना चाहते हैं कि यीशु में कैसे जियें ?

।। तब यह पुस्तक आप ही के लिये है।।

भाई हेनरी पल्सीफर द्वारा संकलित

और

पॉला मिंगुची द्वारा चित्रित

आपको सफल और विजयी जीवन जीने में सहायता करने हेतू अध्ययन की श्रृंखला की यह प्रथम रचना है। भाई हेनरी ने ५० से अधिक वर्षो तक यीशु के लिये जीने से विजय का अनुभव किया है। साथ ही क्रूस के साथ चलने से उन्हे केंसर से भी चंगाई मिली है। चँगाई मिलने के बाद उन्हों ने संसार की यात्रा की, जिस में उन्होंने यीशु को बाँटा और औरों को सिखाया कि यीशु के लिये जीने से विजय और सफलता कैसे प्राप्त की जाती है , जिससे परमेश्वर का उद्देश्य उनके जीवन में कैसे पूरा होता है।

अपने इन अनुभवों पर आधारित लेखों का संकलन उन्होंने किया है, जिससे पवित्र शास्त्र के मूल सिध्दांतो को लोगों को समझने में और उनके मुताबिक जीवन जीने में सहायता हो, जिससे (लोगोंको) उन्हे एक सफलतापूर्ण, विजयी जीवन प्राप्त हो। इस विशेष अध्ययन की रचना , पारिवारिक जीवन के लिये, परमेश्वर के सिध्दांतो को समझने में सहायता करने के लिये की गयी है। इस से आपके निजी जीवन में भी , (परमेश्वर का) (धार्मिक) व्यक्ति बनने में और प्रत्येक दिन

यीशु के लिये जीने से आप को सफलता और विजय की प्राप्ति होगी। इस के उपयोग से आप औरों को पारिवारिक जीवन के बारे में सीखा सकेंगे और, व्यक्तिगत और सामुदायिक अध्ययन के लिये भी कर पायेंगे।

प्रतिलिप्यधिकार १९९० सर्व हक सुरक्षित

इस अध्ययन का कोई भी हिस्सा प्रकाशक की अनुमति के बिना छापना नहीं है।

अतिरिक्त , कुछ हिस्से छापने के बाद मुफ्त में बाँटे जाए।

मूल स्त्रोत को उचित प्रमाण देना आवश्यक है।

PUBLISHED BY:

BROTHERS & SISTERS IN CHRIST
P.O. Box 431
Kiln, MS 39556
USA

Phone (228) 255-9251
Fax (228) 255-8927
Email basic@basicministries.com
On the web at www.basicministries.com